

* श्री *

अर्जुन-गीता



प्रकाशक

(राजा) रामकुमार बुकडिपो

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो,

हजरतगंज, लखनऊ

१९५६

मूल्य १=)

* श्रीगणेशाय नमः *

अर्जुन-गीता

—:०:—

॥ दोहा ॥

हे यादव गोपीरमण, नील जलद तनु श्याम ।
अर्जुनगीता रचत हौं, करिके तुमहिं प्रणाम ॥ १ ॥
विघ्नहरण सब सुखकरण, गणपति प्रथम मनाय ।
छन्दबद्ध गीता करौं, भाषामहँ सुखदाय ॥ २ ॥
मोक्ष हेतु है साधु कहँ, गीता केर विचार ।
कथन नाम है ईश यश, कहौं बुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥
गुरु के पदपंकज बिशद, तिनहाँ को धरि ध्यान ।
सबै विश्व पावन करन, भाषा गीता ज्ञान ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रीगुरुविष्णुकेचरणमनाऊँजेहिप्रसादगोविंदगुणगाऊँ
श्रीकृष्णार्जुनकीरसबानी । गुरुप्रसादकछुकहौंबखानी

एक समय आये यदुराई । अर्जुन संगम भा यक ठाई
 धूप दीप लै आरति कीन्हा । चरणोदक माथे पर लीन्हा
 हाथ जोरि अर्जुन भय ठाढ़े । सहित भगति उर आनँद बाढ़े
 संशय प्रभु एक है चित मोरे । कहहुँ सो नाथ दोउ कर जोरे
 दीन दयाल देहु समुझाई । श्रेष्ठ मोक्ष कवने विधि पाई
 कौन धर्म कीन्हें गति होई । सो मोहिं कहहुन राखहु गोई
 स्थावर जंगम आदि बखानी । कीटपतंग चारि गुण खानी
 चारि खानि प्रभु तुमहिं बनाई । सबसे श्रेष्ठ कौन यदुराई

॥ दोहा ॥

इनमें को अति श्रेष्ठ है, सो मोहिं कहहु बिचारि ।
 शरण चरण प्रभु राखहु, होहु प्रसन्न मुरारि ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रीकृष्णहु बोले बिहँसाई । यह संशय तोहि कहहुँ बुझाई
 कहैं रसाल बचन यदुबीरा । सबसे दुर्लभ जवन शरीरा
 मानुषमें बड़ ब्राह्मण ज्ञानी । ब्राह्मणमें बड़ तपसि बखानी
 तपसीसों बड़ सुनहु कुमारा । मोर नाम जेहि प्राण अधारा
 निसि बामर सुमिरे जो मोई । तेहिते बड़ औरो नहिं कोई

॥ दोहा ॥

एक नाम चित लाइ के, सुमिरे निसिदिन मोय ।
बिप्र तपस्वी अरु यती, तेहि पटतर नहिं कोय ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनबिनवै दोउकरजोरी । बिनतीकरहुँमूढ़मतिमोरी
तुमप्रभुआदिअन्तसबजाना।मोपर कृपा करहु भगवाना
तुमजोकहतपसीबड़आहीं । नाम भजन के पटतरनाहीं
यहसंशयमोहिकहहुबुभाई श्रीमुखसुनहुँ तोमनपतियाई

॥ दोहा ॥

तपसी तप अधिकार बड़, ज्ञान ध्यान दृढ़ सोइ ।
नामभजहिजोप्राणिनित, तेहिसमान नहिं कोइ ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

कहत रसाल वचन यदुराई । सुनअर्जुनतोहिकहहुँबुभाई
योगरतीसुन बृथा कुमारा । तासो वचन कहहुँ निरुपारा
वर्ष सहसदस बीता जबहीं । आसन दृढ़ तपसीहोतबहीं
अन्तप्राण त्याग जोकोई । प्रेम पुरुष पुनि भेटे सोई
पुष्पकली बिकसे नहिं पाई । अन्तर बास कहाँते आई
रामनाम सुमिरणनहिं करहीं । कहु अर्जुन कैसे वे तरहीं
तपसी तप सुनु कंतिकुमारा । योग यतीकर है व्यवहारा

॥ दोहा ॥

नाम को महिमा जानई, साधै योग अघोर ।
काया आछत पावई, सत्य बचन सुनु मोर ॥ ८ ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु अर्जुन कहौं बिचारी । राम भजन के सब अधिकारी
राम नाम सुमिरण जो करई । क्षण महँ भवसागर सो तरई
राम नाम भज जो चितलाई । धर्म अर्थ विद्या फल पाई
सो गृहस्थ अगणित सुख पावहिं प्राण अंत बैकुंठ सिधावहिं
योग सुखद अतिकुन्ति कुमारा । तुम से बचन कहौं निरुपारा
योग साध जो प्राणी ध्यावै । तबहीं अमर परमपद पावै
भोगनहार तो पार न पावै । जैसे मारग अन्ध भुलावै
नाम की महिमा कहत न आवै । क्षण इक भजे अमरपद पावै
अर्जुन बचन सुनत हम पाहीं नाम भजन सम जग कछु नाहीं
नाम भजन सुमिरण जो करई । भवसागर क्षण महँ सो तरई
राम नाम जग है आधारा । नाम लेत भवसागर पारा
भक्त हमार प्राण सम अंगा । सदा रहौं भक्तन के संग
सदा फिरौं भक्तन के साथ । शंख-चक्र गदा लिये हाथा
गायसंग बछराजि मिरहई छीरकी आश छण कनहित जई

सुनु अर्जुनसमुझावों तोहीं । मोरनाम मोहन असमोहीं
नाम ब्रह्म चित जाने जोई । आवागमन न ताकर होई

॥ दोहा ॥

पारब्रह्म निश्चय करि, जानो कुन्तिकुमार ।
तीनिलोक तारे सही, एक नाम है सार ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु पार्थ भाषों मैं तोहीं । नाम भजै सो भेंटै मोहीं
तेहिते मोर कछू ना माया । अन्तकाल चित राखौंदाया
भक्तहमार सदाहित आहीं । आयेयुग कछु अन्तर नाही
भक्त एक हमहींकर देखहु । भिन्न २ कबहूँ जनि लेखहु

॥ दोहा ॥

भक्त मोर मैं भक्त कर, सुनु अर्जुन ठहराय ।
एक आत्मा जानहू, तोसों कहौं बुझाय ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो यदुराई । यह तौ जानत हौं मनभाई
भक्तिहेतुमोहिंभेदकछुनाहीं । यहतो विदितअहैसबठाहीं
भक्त तुम्हार सदाहितआहीं । सो विचार अपने मनमाहीं
यहसबतोहिंमैंकहहुँ बुझाई । सुनहुसोअर्जुनतुममनलाई

सदा रहहुँ सन्तन के साथ। शंखचक्र गदा लिये हाथा
और बात तोहिं कहौं बुभाई। मन वचकर्म सुनहुमनलाई
॥ दोहा ॥

मोर भक्त मोहिं चित धरहि, नाम जपै दिनरात ।
तेहि कारण सुनु अर्जुन, छाँड़ि सकौं नहिं साथ ॥ ११ ॥
॥ चौपाई ॥

जाके घर एक बालक होई। विपतिपरेहु नाछाड़िहि सोई
पुत्र बाप कर जानै सोई। तेहि प्रतिपाल करे सबकोई
सुतकोपितु जो जानै सोई। विपतिपरे नहिंछाड़िहि जोई
भक्त हमार धर्म के बापा। तेहिसों अर्जुन कहे न आपा
॥ दोहा ॥

भक्त मोर जब बोलै, राधा कृष्ण मुरारि ।
तेहि क्षण जिह्वा स्वर्गसे, उत्पति होय हमारि ॥ १२ ॥
॥ चौपाई ॥

अर्जुन विनय करत करजोरी। पारब्रह्मसुनु विनती मोरी
जोतुम कहत सोईपरमाना। आदिअन्तमोहितकरजाना
श्रीमुख वचन मृषा को करई। हरिहर ब्रह्मा मेटि न सकई
मैंअतिदीनन वचन अनंता। भक्तहिंअतिमानत भगवंत
कहैगोविन्दवचनहितकारी। सुनहुपार्थतुमहृदयविचारि

हरि प्रह्लाद देवजी आहीं । मम भक्तन के पटतर नाही
 मैं जहँ जाहुँ भक्त तहँ जाहीं । औरन के आधीनसो नाही
 चन्द्र सूर्य वायु अरु पानी । इनहूँ महिमामोरि न जानी
 इन कहँ अगम कछू है नाही । भक्त मोर पहुँचे क्षण माहीं

॥ दोहा ॥

भक्त मोर मोहि जानहीं, मैं तेहि जानहुँ बीर ।
 भक्त मोर मैं भक्तकर, सुनहु पार्थ मतिधीर ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

शंकरसुमिरिपरमपदपावहिं नारदव्याससदागुणगावहिं
 चारिउमुख ब्रह्मा गुण गावै । सुमिरण करै दर्श ना पावै
 सुरनरमुनिआदिकगुणगावै । आदिअन्तकोइ पारनपावै
 भ्रुव प्रह्लाद अमरपद पावहिं । भक्तहेतुप्रभुदर्श दिखावहिं
 कलियुगमेंसंतनसुखकीन्हा । घर बैठे दर्शन प्रभुदीन्हा
 पीपा भक्त औ मीरा बाई । प्रेमसहित भेंटैउ चितलाई
 रामानन्द कबीर गुसाई । इनकी महिमा कही न जाई

॥ दोहा ॥

जेते कलि महँ भक्त भे, कहँ लगि करौं बिचार ।
 सबकी आशा पूरई, यदुपति नन्दकुमार ॥ १४ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरुविरंचि विष्णुशिवआहीं । यामोअन्तर है कछु नाहीं
 वृथा जन्म ताकर नहिं होई । गुरु शरण महँ जावैसोई
 श्रीस्वामीत्रैलोक्यकेनायक । यदुनंदनसन्तनसुखदायक
 सुमिरत राम सदा सुख पाई । अन्तकाल मुक्ती ह्वै जाई
 गुरु अहै जग सिरजनहारा । भवसागर से तारनहारा
 गुरु के बिना अधमगति होई । भलाबुराचीन्है नहिं कोई
 नावबिनाकेवटकाकरहीं । गुरुबिनुफनकोनहिं भव तरहीं
 निगुरा हाथहिजेजलजोई । मद्यसदृशजानहु जल सोई
 भक्तन के मुख मेरो बासा । हिरदै बैठि करौ परकासा
 जो कछुविष्णुमोक्षपदआहीं । जेतिकमानुषभोजनकरहीं
 भक्त मोर होवै जो कोई । तुरत प्राप्त मो कहँ सो होई
 जो मोहिं भक्तन लावै हाथा । उहै उच्छिष्ट कहै यदुनाथा
 सो हम कहँ पहुँचै नहिं भाई । भक्त मोर पहुँचै क्षण जाई

॥ दोहा ॥

ब्रह्मज्ञान जो मन्त्र है, भगत हाथ सो आहि ।
 कहहु भक्त जो पावहीं, भलमन्दा कछु नाहि ॥ १५ ॥

अवरो मंत्र देइ जो कोई । तौ जानहि दोष तेहि होई

॥ दोहा ॥

यह सब दोष गुरु कहँ, सीख न माने कोय ।
कुम्भीपाक नरक महँ, निश्चय जावै सोय ॥ १६ ॥

॥ चौपाई ॥

नाना बेद पढ़ै जो कोई । गुरुमुख बचन समान न होई
गुरु कहँ पूछ जाय जहँ जानै । भयचिन्ता हिरदय नहि आनै
चार बेद मुख पाठ बखानै । अन्तरगतिसोय नहि आनै
पढ़त पढ़त सब जन्म गँवावै । नामकी महिमा जानि न पावै
निश्चय नाम जो चितहि लगावै । क्षणइक भाव परम पद पावै
सिद्ध समाधि लगावै जोई । नामकी महिमा जानत सोई
भूमिसमान दान जो करई । लक्ष योजन नाम जो धरई

॥ दोहा ॥

तीरथ ब्रत अरु यज्ञ करि, बहुत विचारे बेद ।
सहस्र योजन नामते, जाइ रहा सब भेद ॥ २० ॥

॥ चौपाई ॥

जिन ब्रह्मा सब सृष्टि सँवारी । नाभि कमल ते भये हमारी
ब्राह्मण होय बेद सब पढ़हीं । मोर नाम जो चितमाँधरहीं

विद्या वेद न भूले सोई । भोजन रस जाने कस होई
स्वपनाभक्त मोर जो होई । तेहि समान अर्जुन ना कोई
यह संसार रामसे भयऊ । कोटि कोटियुग बीतत गयऊ
विष्णुकिमाया यह संसारा । राम नाम ते छुटहि कुमारा
सुनु अर्जुन मैं कहौं बखानी । नामकी महिमा हमहुँ न जानी
प्रथमहि यह भाषा मैं तोहीं । नाम भजै सो भेटै मोहीं

॥ दोहा ॥

कहत खोरि मोहि लागई, सुनहु बचन भगवान ।
महिमा तुम्हरे नामकी, कैसे जानहि मान ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुन तै मन दृढ़ लाई । यह संसय तोहि कहौं बुझाई
तीरथ ब्रतन करै नर जोई । अमित पुण्य फल पावै सोई
आसन बैठि मोर गुण गावै । कोटि तीर्थ तेहि ठौरहि पावै
लक्ष्मीपति सङ्गसों आहीं । नामकी महिमा जानत नाहीं

॥ दोहा ॥

चन्द्र सूर्य अरु पवन जल, नवग्रह सकल नक्षत्र ।
माया मोरि न जानहीं, कोटि जपै जो मन्त्र ॥ २२ ॥

॥ चौपाई ॥

नामसुमिरिशिवअमरजो भयऊ जन्ममरणकरसंशयगयऊ
 नामस्मरणमहीशजबकीन्हातिलसमानधरतीधरलीन्हा
 रामनामसुमिरनध्रुवकीन्हापदवीअचलतेहिकारण दीन्हा

॥ दोहा ॥

राम नाम निश्चय करि, जानहु कुन्तिकुमार ।
 चारि बेद मो अर्जुन, दुइ अक्षर है सार ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहुबचन देवन को देवा । अर्जुन कहतबिनयकरिसेवा
 केहिविधिमोगतिहोइगुसाँई । सोमोहिंसोचकहोयदुराई
 बहुपापी दोषी मैं सोई । भाषहु सो नहिं राखहुगोई

॥ दोहा ॥

केतिक पाप करै नर, कौन दण्ड है ताहि ।
 हिरदय गती विचार कै, प्रभु भाषौ मोहिं पाहि ॥ २४ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनो कहौ मैं तोहीं । जोअतिहितकरि पूछेमोहीं
 सतपालन प्राणी जोकरहीं । लजितहै यदुपतिअबकहहीं
 सहसपाप मुख बाहर होई । बचन कहै बूझै ना कोई
 एकलख पापकरै नर जोई । कञ्चन काया कुष्ठी होई
 दश सहस्र पातक जोकरहीं । दुःखीरोगप्रसितहै मर

कोटिपाप करि अन्धा होई । भलाबुरा चीन्है ना कोई
तातेपापको यह फलभाई । बधिरहोइ श्रवनहिंनसुनाई
एतना पाप वर्ण जो करहीं । घरघर भिक्षा माँगतफिरहीं
माँगै भीख न पावै दाना । ताके पापकोलेख न आना
पापकोटिदुइकरजेप्रानी । सन्ततिहीनअधमकरिजानी
ताकर मुख भोरहिं जो देखै । महापाप अपने शिर लेखै
जोमुखदेखि करै असनाना । द्वादसपल सोनादेइदाना
अन्तकीबातकहबना तोहीं । महिमाकछुएकबेवराओहीं
तेहिके बचन उतर जो देई । महापाप अपने शिर लेई
दुइ असनान करै जो कोई । तब तेहि पाप ते छूटे सोई
शुभकारज बोले जो कोई । निश्चय कार्य नाशताहोई
अर्जुन बिनवै द्वौकरजोरी । सुनहुनाथएकबिनतीमोरी
यदुपतिसर्वपूज्य भगवाना । सबकर जानहुएकसमाना
निर्वशी जेतक जग आहीं । धर्मवन्त कोउअहैकिनाहीं
भला बुरा सब हैं यहि ठाई । सबकर भेद कहौ यदुराई

॥ दोहा ॥

उत्तम मध्यम नीच के, कह्यो भेद मोहिं पाहि ।
तुमहिं बिना जगजीवन, औरहिपूछहुं काहि ॥ २५ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनुअर्जुनमनज्ञानविचारी । यह संसार जे पार उतारी
 ज शंका तुम पूछेहु मोहीं । सब वृत्तान्त कहौं मैं तोहीं
 अपुत्रीक प्राणी जो होई । सत सङ्गति पावै नहिं सोई
 भावभक्तिजोचितनहिं धरहीं । निश्चयज्ञानहृदयमहँ करहीं
 भाव भजन महँ जोचितलाई । ताकर पाप सबै क्षयजाई
 कोई कथा जो मोर चलावै । तहाँ जाय निश्चय चितलावै
 भक्त हमार जहाँ गुण गावै । तिनके चरणन शीशनवावै
 धर्म कर्म महँ निश्चय रहहीं । मुक्तहोय संशय नहिं भ्रमहीं
 सर्व जीवमय करुणा राखै । सत्यहिं बोलै भूठ न भाखै
 कामक्रोधकोचित्त न धरई । गौ ब्राह्मण की रक्षा करई
 हिरदय सदा मोर गुणगावै । अपुत्रीक बैकुण्ठ सिधावै
 और बात कहौं मैं तोहीं । मिले न तृण बिन आज्ञामोहीं
 अर्जुन भाष दोउ करजोरे । संशय एक उपज मनमोरे
 जन्मतोआखिरजगमहँ होई । पाप किये बिन रहै न कोई
 तातजो मोहि भयउ सन्तापा । कैसे देह होय निष्पापा
 पापिननाम कहौसमुझाई । तिनकरपापकौनविधिजाई
 और बात तोहि पूछों स्वामी । तीनलोक के अन्तरयामी

गोहत्या प्राणी जो करई । केतिक दिनमें सो निस्तरई

॥ दोहा ॥

यह संशय जगदीश जू, मो मन उपजो आय ।

भिन्नभिन्न के स्वामि जू, सो मोहिं कहो बुभाय ॥ २६ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनहु एक चितलाई । सब वृत्तान्त कहौं समुभाई
गो हत्या प्राणी जो करई । ज्ञानध्यान कीन्हें निस्तरई
तीरथ व्रत न करे नर जोई । युग बीते बिन पाप न खोई
त्यस्त्रा पात्र कहौं अधिकारी । चारो युग बीते क्षय जाई

॥ दोहा ॥

इन कर यह व्यवहार है, सुन अर्जुन चितलाय ।

ऋणहत्यागति कठिन है, दिये बिना नहिं जाय ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो यदुराई । ऋण हत्या कौने विधि जाई
दिये बिना ऋण छूटत नाही । तेहिमें यह व्यवरा जो आहीं
साधु पुरुष ऋण काढ़ै कोई । दण्ड भये बिन बचै न कोई
हमलवलीन प्राणि जो रहई । ऋण चिन्तानि सिवा सर करई
साधुसङ्ग महँ मों गुण गावै । प्रेम-भक्ति हिरदय में लावै

एक चित्त जो मोपर राखै । भलाबुरा नहिं मुखते भाखै
 साहुको आवत देखै जबहीं । विमुख होयरहे नहिंतबहीं
 धायधूप ऋण मोचत जाई । जो कछु जरै सो दे पहुँचाई
 धायधूप ऋण होय न पारा । तेहिके दोष न कुन्तिकुमारा
 जहिके चित्तसदा अस आहीं । छूटे ऋण संशय कछुनाहीं
 साहुसो साँच रहै मन माहीं । मन्द होय तो पहुँचे ताहीं
 तेहिप्राणीकोयमनहिलेहीं । अगलाजन्मों सुखितसन्देहीं
 साहुकार जो धरता होई । तो पाये खाये सुख सोई

॥ दोहा ॥

ऋणकर यह वृत्तान्त है, सुन अर्जुन चितलाय ।
 जहाँ आश है जाहि कर, तहाँ देउँ पहुँचाय ॥ २८ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो भगवाना । यह तो उत्तम करपरमाना
 उत्तमबुद्धिऋण करजा होई । पुनि उत्तमगति पावै सोई
 ऋण काढ़ै अस पापी जाना । सोकसगति पावै भगवाना

॥ दोहा ॥

धर्मवन्त ऋण काढ़ै, पावउँ ताकर अन्त ।
 पापीजन जो लेइ ऋण, कहौं तासु विरतन्त ॥ २९ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसुनो एक शुभवानी । यह बृतान्त तोहि कहौ बखानी
 ऋणको काढ़ि दान दे कोई । मिथ्या अहै उचित नहि सोई
 ऋणकाढ़ै पाले परिवारा । सो मिथ्या नहि आर्यकुमारा
 ऋण काढ़ै भूठा प्रण करई । नीच संग नारि परिहरई
 चौकन चौकन फिरे उतंगा । नारिछोड़ि निज करि परसंगा
 साहुको आवत देखे जबहीं । जाय छिपायरहे पुनित बहीं
 खायपिये ऋण देन नचाहै । यह करपाप सोनि शिदिन राहै
 प्राण अन्त तेहि यम ले जाई । तेहिकर अस्तुतिकरै बनाई
 चमरा काटिके बँत लगावै । पंथ माहि घिसियावत लावै
 पहिले लै सेमर में बाँधै । तप्तफार तेहि मुख में साधै
 लोह की लाठी से पिटवाई । अङ्ग अङ्ग काँटा चुभवाई
 तहवाँते पुनि बेगिलै आवै । तावापर तेहि पुनि बैठावै
 तेहिके तर पुनि आग लगावै । ऊपरतेल आँचि ढरिकावै
 कष्ट अनेक देहि तेहि भारी । नरककुण्ड में राखहि डारी

॥ दोहा ॥

केतिक दिन तेहि नरकमहँ, तहँते काढ़ि पुनि लेहिं ।
 अंग भंग करके पुनि, जन्म नीच घर देहिं ॥ ३० ॥

पुनि वह जगमें से निस्तरई । धरता होय वही सो भरई
 आधा अंगहि मोरत आई । तिहिते अन्त कहा समुझाई
 तीन लोक मेरे ऊपर माहीं । सबकर तन्त्रमन्त्रमोहिपाहीं
 यह संसार जहाँ लगि होई । मम आज्ञाबिन अहेन कोई
 नित उठि भोजन सबको देऊँ । सबकी खबर साँझको लेऊँ
 जौन अहार जन्तु जो खाई । ताकर तैसे देऊँ पहुँचाई
 मम आज्ञाबिन अन्नन पावै । कोटिभाँतिकरियुक्तिबनावै
 सबको आस हमारी आही । सुनु अर्जुन तोसों सतकाही
 कीटपतंग में बास है मेरा । मैंही हौं रक्षक सब केरा

॥ दोहा ॥

एक आत्मा जानहु, दूसर तिहुँ पुर नाहिं ।
 कहौं गुप्त कहि प्रगट है, सुनु अर्जुन मन माहिं ॥ ३१ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै दोउ कर जोरी । आदि अन्तशरणागत तोरी
 श्रीयदुपति त्रिभुवन के कर्ता । दुष्ट दलन सन्तन दुखहर्ता
 आदि अन्त भक्त भयहारी । सब में व्यापक देख मुरारी
 जो तुम कहो सोइ मैं जाना । औरहु कथा कहो भगवाना

॥ दोहा ॥

धर्म जन्म कवने विधि, कवने जनमै पाप ।
सो स्वामी कह देउ मोहि, उपजा बड़ संताप ॥ ३२ ॥

॥ चौपाई ॥

धर्म पुण्य कीन्हें यश होई । दया करै तो जन्मे सोई
कामाते धर्म चलै यश होई । लोभ तेज जो जन्मे सोई
काम वस्तु सम्पूरण होई । उत्तम गति पावे पुनि सोई

॥ दोहा ॥

यहि विधि जानो अर्जुन, पाप पुण्य उत्पाति ।
तुम तो मोरे प्राणहित, कहौं वेद बहु भाँति ॥ ३३ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन ठाढ़ भये प्रभु आगे । हाथ जोरिके पूछनलागे

॥ दोहा ॥

बेदन बिषै बिचारि के, मोहि कहो नन्दलाल ।
कवन कर्म के कीन्हें, प्राणि होय चण्डाल ॥ ३४ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनहु कहत भगवाना । इतनी बात सुना परमाना
ब्राह्मण ब्रह्म कर्म नहिं राखै । देवलोक सबही प्रति भाखै
बिना दतूनी भोजन करई । सोचाण्डाल कृष्ण अस कहई

देवन पूजे बिन पग धोये । अर्जुन सुन चण्डाल है सोये
जाके मात पिता बृध होई । सेवा करै पुत्र ना सोई
ताही को तुम मृत कहि जानौ । अर्जुन सोचा चण्डाल हि मानौ
पूरण गर्भ नारि जो अहई । ताकर पुरुष संगते हि करई
हत्या तुल्य पाप है ताही । अर्जुन सुन चण्डाल सो आही
आगिल गाय के देह जरई । सुरा अमिषनि सिबासर खाई
महापाप निश्चय सो जाना । सो अर्जुन चण्डाल समाना
बच्छा गाय बिछोह करावै । सो प्राणी चण्डाल कहावै
अर्जुन सों ये कहै नन्दलाला । पक्षिन में कागा चण्डाला
पशु अन में गर्दभ को मानो । बनस्पतिन में ताड़ बखानो
पानी पियत गाय खेदवावै । सो प्राणी चण्डाल कहावै
तेल लगाय न कर अस्नाना । सो प्राणी चण्डाल समाना
रति करि जो न करै अस्नाना । सो प्राणी चण्डाल समाना

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाइँजू, यह जानत कछु नाहिं ।
कवन दान के दीन्हें, कवन पुण्य है ताहि ॥ ३५ ॥

॥ चौपाई ॥

हित करि अर्जुन पूछेहु मोहीं । दान की विधि भाखहुँ मैं तोहीं

दश गोदान देइ जो कोई । एक धेनु फल पावै सोई
 धेनु दान दश देइ जो कोई । साँड़ एक दीन्हें फल होई
 दश साँड़ दान जो देई । कपिला एक दिये फल होई
 कपिला दान करे दश जोई । कन्यादान दिये फल होई
 दश कन्या दे दान जो कोई । विगहा भूमि दिये फल होई
 दश विगहा भूमि दे कोई । ज्ञान ध्यान फल पावै सोई
 दान ध्यान कहि ज्ञान कलेषा ॥ आसन उन कर सुनिय विशेषा

॥ दोहा ॥

जेतिक दान करै नर, तेहि फल पावै सोइ ।
 शालिग्राम के दान सम, और दान ना कोइ ॥ ३६ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुन निश्चय कै भाखौ । सो तुमनि जहिरदय मोराखौ
 आसन भेद जो पूछहु मोहीं । सो सब भेद कहौ मैं तोहीं
 बस्तर आसन ध्यान लगावै । दुखी होय कछु फल ना पावै
 पत्थर आसन जपे जो कोई । सुनु अर्जुन सो रोगी होई
 भूमि आसन जपै जो कोई । ताको कछु पुनि पाप न होई
 यहि आसन कर यह गुण होई । निश्चय अर्जुन मानो सोई
 अवरो आसन सुनो कुमारा । उत्तम गति पावै संसारा

मृगछाला आसन बैठावै । करै भजन मुक्तिगति पावै
जो घर बैठि जपे मम नामा । सुत कलत्र देऊँधनधामा
मुनिनकेरआसनजोआहीं । मनुष्यमहिमाजानतनाहीं
कुशआसनजोध्यानलगावै । ज्ञानी होयसिद्धफलपावै
काम क्रोध तजि ध्यावै जोई । नेमधर्मफल पावै सोई

॥ दोहा ॥

तब अर्जुन कर जोरिके, कहा सुनो यदुराय ।
सदा संयोग न पावै, ताको कौन उपाय ॥ ३७ ॥

॥ चौपाई ॥

कृष्णकहहिअर्जुनहिबुभाई । सदासंयोगआसनहिपाई
तेहिकरएकअहैपरकारा । सो मोसे सुनु कुन्तिकुमारा
तृण एकजहाँतहाँते लावै । द्वादशअंगुलप्रमाणबनावै
अर्जुन कहै दोउकर जोरी । और कछू बिनतीप्रभुमोरी
आसनविधिपूछेउँ भगवाना । तुमप्रसादपायउँ ब्रह्मज्ञाना
भजन भेद भाषौ यदुराई । कौनी भाँति कौन फलपाई
कौनी माल कौन फलहोई । सोमोहिकहौनराखौगोई

॥ दोहा ॥

सुनहु स्वामि जगजीवन, यदुपति नन्दकुमार ।
भजन भेद जिमि जानहु, श्रीमुखकहौबिचार ॥ ३८ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनुअर्जुननिश्चयचितलाई। भजनभेदतोहिकहौंबुभाई
अंगुलरेखभजनजेकरई। अष्टगुणाफलप्राप्तिसोकरई
मोतिनमालभजनजोकरई। दशगुणफलतेहिनरकोहोई
शंखमणिमालजपैजोकोई। द्वादशगुणफलताकोहोई
कमलमालजपैजोकोई। सहस्रगुणफलताकोहोई
सुवरणमालाजपैजोकोई। एककोटिफलताकोहोई
कुशकाँड़ीमालाजपजोई। दशकोटिफलताकोहोई
पद्मफलमालजपैजोकोई। पन्द्रहलक्षताहिफलहोई
चन्दनमालाजपैजोकोई। दशसहस्रकोटिफलहोई
रुद्राक्षमालाजपैजोकोई। बारहकोटिताहिफलहोई
तुलसीमालजपैजोकोई। ताकरफलमोगिनतीनहोई

॥ दोहा ॥

भजनभेदसबभाषेहूँ, सुनुअर्जुनचितलाय।
औरकछूजोपूछहूँ, सोमैंकहौंबुभाय ॥३६॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनकहैसुनौबनवारी। औरोकहोपिताम्बरधारी
केहिकेछुयेदोषहैस्वामी। सोबिचारकहुअन्तर्यामी
सुनुअर्जुनतूएकचितलाई। यहसंशयतोहिकहौंबुभाई

मकखी बिष्णुअंश जोआहीं । तेहि बैठे कछुदोषहैनाहीं
 देवन के भोजन छुइ जाई । हँ निश्चितसोभोगलगाई
 भक्ष्याभक्ष्य मँजारी खाई । वाही मुख भोजन छुइजाई
 यहिबातन कछुदोषन आवै । हँ निश्चितसोभोगलगावै
 निजनारीसंगशयनजोकरहीं । अंतकियेकछुदोषनहोहीं
 बात कहे मुख थकै जोई । तेहिकर दोष कछू नहिं होई
 हाथ एक तृण तौरै जोई । चाण्डाल मानव सो होई
 अर्जुन सत्य सुनो हमपाहीं । तेहिकरदोषकछूनहिंआहीं
 अर्जुन कहै सुनो भगवाना । एक वृक्ष पर आछे जाना
 नाव एक दिशि हाँडी होई । अन्त राँध राखै जो कोई
 तेहिकरदोषकछूनाअहहीं । निश्चयवचनकृष्णजोकहहीं
 ब्राह्मण केहि नारि जल देई । भिक्षा अपने बासन लेई
 दोषन अहै कृष्णअसकहहीं । द्वादशअंगुलबीचजोरहहीं
 सेज भूमि पर सोवत ओई । एक चण्डाल शूर जो होई
 राजा पीठ पर बैठे सोई । ताकर दोष कछू ना होई

॥ दोहा ॥

भजन भेद सब भाषेउँ, सुनु अर्जुन चितलाय ।
 औरहु जो कुछ पूछहूँ, सो मैं देउँ बताय ॥ ४० ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो भगवाना । तुमहीं छँड़िन जानौं आना
इनको भेद कहो यदुराई । जिनकर बंश नाश हुइ जाई

॥ दोहा ॥

कवन पाप से स्वामिजू, बंशनाश होइ जाय ।
कृपा करो गोसाईंजू, मोहिं कहो यदुराय ॥ ४१ ॥

॥ चौपाई ॥

सत्यबचन सुनु कुन्तिकुमारा । यहि बात न कर करो बिचारा
जौन नारिके सुत नारहई । निशदिन परपुरुषन मन धरई
श्रीस्वामी को चित्त न लेवै । बात कहत उत्तर सो देवै
पीहर दुइकुल अपयश पावै । प्राण अंतयमलोक सिधावै
और कथा सुनु अर्जुन सोई । बंशनाश जेहि कारण होई
सत्यबचन बोले नहिं प्यारा । चित्त मों बसे पराई दारा
सभा बैठि परनिन्दा करई । कान लगाइकै नृपसों कहइ
परधन कादि द्रव्य जो देई । सो संताप आपनो लेई
जो पराइलेइ सुख सो खाई । ताकर बंशनाश होइ जाई
ऊँच नीच ना करै बिचारा । सदा अनीत संग परदारा

॥ दोहा ॥

परजहिं सदा सतावई, पाप पुन्य नहिं जान ।
बंशनाश होइ तेहिकर, मुनु अर्जुन परमान ॥ ४२ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसुनोएक चितलाई । जेहि घरगैयाहोयअधिकई
गर्व करै तो सकै न रोकी।रोगब्याधिजोगायनब्यापी
ताको बंश नाश होइ जाई । यह जानोनिश्चयतुमभाई

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाँइजू, पायउँ सबकर अन्त ।
पाँचरत्न जग कहत हैं, वर्णहु सब भगवन्त ॥ ४३ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रीगोविन्दकहैंशुभवानी । मुनुअर्जुनतोहिकहौँबखानी
ठाकुरको यह सब सुख देई । दुख संकट अपने शिरलेई
मीठाबचनसोसबदिनभाखे । दया धरम हिरदयमें राखे
भावभक्तिसोभाषण करई । करै सहाय बचन सम करई
परै अकालप्रजा प्रतिपालै । दुःख परै तो सत्य न घालै
भक्ति होत तो दे पहुँचाई । आशनिराश कबहुँनाजाई
ब्राह्मण गायकी रक्षा करई । नेम धर्म अपने मन धरई

उत्तम नारि गाँव में देखै । जस कन्या अपने घर लेखै
दंड भंग करि कछुना लेई । विपनि द्रव्य कबहूँ ना देई

॥ दोहा ॥

यह लच्छन कर ठाकुर, भक्ति भाव कर जान ।
एक रत्न सो अर्जुन, सत्य कहै भगवान ॥४४॥

॥ चौपाई ॥

जौन त्रिया निश्चय चित होई । धर्म कर्म हित राखै सोई
स्वामी केर करै नित पूजा । और पुरुष नहिं जानै दूजा
मात पिता स्वामी कर होई । अपनाई करि जानै सोई
ब्राह्मण गाय देवसम जानै । यह अपने मन निश्चय मानै
भिक्षुक आय निरासन जाई । जो कुछ जरै सो देइ मँगाई
पतिव्रता सो सती कहावै । आप तरै दुइ कुलन तरावै

॥ दोहा ॥

यहि लक्षण की भामिनी, सुनु अर्जुन चितलाय ।
एक रत्न सो जगत महँ, सत्य कहै यदुराय ॥ ४५ ॥

॥ चौपाई ॥

जो नर होय समर में शूरा । धीरज साहस मुख को पूरा
ताकर स्वामि जो रण में हारै । स्वामी को संकट जो टारै

लागो घाव न मानै हारी । संकट परे देवता चारी
जियत रहै तो फेरि ले आवै । जूझै स्वामी कार्य सिधावै

॥ दोहा ॥

एक रत्न अस शूरमा, अर्जुन जानो सोय ।
जियत जगत यश पावई, मुये मुक्तिपद होय ॥ ४६ ॥

॥ चौपाई ॥

भाग्यवन्त नर जगमाँ कोई । अन्न चित्त सम्पूरण होई
प्रथम सावधान गृह रहई । अहङ्कार कबहुँ नहिं करई
अपने कुटुम्ब जहाँ लगि जानै । माया गर्ब बीच नहिं आनै
भाई बन्धु और जो कोई । यार दोस्त बैरी किन होई
बाहर के आवै मेहमाना । ताको बिदा करै सनमाना
सबकर आदर करै बनाई । बिदा करै बहु प्रीति बढ़ाई
दुखित देखि चित दया जो करई । भक्ति हमार हृदयमों धरई
गो ब्राह्मण देवन सम जानै । कुल कुटुम्बकी लाज न मानै
भक्ति देखि विष्णु सम पूजै । अवर देव नहिं कबहुँ नदूजै
परनिन्दा परबाद न जानै । परनारी माता सम मानै
नियमदान धर्महुँ कछु करहीं । कछु २ वेद पुराणहुँ सुनहीं

॥ दोहा ॥

यह लच्छन धनवन्त कर, सुनहु सो कुन्तिकुमार ।
एक रत्न जग जानिये, निश्चय वह संसार ॥ ४७ ॥

॥ चौपाई ॥

रविशशिभक्त एक सम आहीं । तुम तो जानत हो मन माहीं
तेहिकर अब मैं करौं बखाना । मैं अपने मन तेहिका जाना
नाम हमार जपै दिन राती । ताको तुम जानहु बहु भाँती
अर्जुन कहै सुनो यदुराई । भक्त तुम्हार प्यार सब गाई
नाम तुम्हार जपै दिन राती । तेहिनर को मानहुँ बहु भाँती

॥ दोहा ॥

जहँ लगि प्राणी मात्र है, सब में बास तुम्हार ।
तिनमहँको है प्रिय तुमहि, सो मोहिकहो विचार ॥ ४८ ॥

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुन मैं भाषौं तोहीं । जानहु सत्य मृषा नहिं होहीं
आनन्दित भिन्नानित करई । सो प्राणी मोकहँ प्रिय अहई
नारी सती जात महँ जोई । तेहि पठवा मानबनहिं कोई
अर्जुन बहुरि कहै करजोरी । पारब्रह्म सुनु बिनती मोरी
और एक संशय प्रभु मोरे । बिनवौं नाथ दोउ कर जोरे
नाथ पवन जो आवै जाहीं । ताकर मर्म कहौ हम पाहीं

॥ दोहा ॥

पवन गवन जहँ जानहू, सो मोहि कहौ बुझाय ।
कवन काम गोसाइँजू, कवन काहि लग जाय ॥ ४६ ॥

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुन तोहि कहौ बुझाई । कौन काम कहाँ लगि जाई
कवने आसन मम जप करहीं । द्वादश अंगुल मारुत बहहीं
अर्जुन गाढ़ होन की बारी । सोरह अंगुल बहै बयारी
साथ चलै जब अर्जुन बीरा । सोरह अंगुल बहै समीरा
बात कहत सब पवन सयाना । छत्तिस अंगुल करै पयाना
काम करत जब प्राणी पावै । एकतालि स अंगुल श्वासा धावै
जब प्राणी को निद्रा आवै । चौदह अंगुल श्वासा धावै
जब नर नारीसों रति करहीं । बावन अंगुल श्वासा बहहीं
जब प्राणी को रोग सतावै । चौंसठ अंगुल श्वासा धावै
बिंशति जितने पवन प्रकाशा । तिनका जानहु कालहि प्रासा

॥ दोहा ॥

पवन गवन के अर्थ सुनि, वहाँ जन्म वृत्तन्त ।
सब शरीर कै अन्त प्रभु, नरसों पावन अन्त ॥ ५० ॥

॥ चौपाई ॥

तब अर्जुन यह मनहिं विचारी । अरु अस्तुति बिनती अनुसारी
बिनती सुनहु मोरिय दुराई । व्यास जन्म सुधिमन मोहिं आई
ब्रह्मा का नाता सो आहीं । तुमसों भेद छिपी कुछ नाहीं
यह संशय मोहिं नन्दकुमारा । केवट तनय कहै संसारा

॥ दोहा ॥

आदि पुरुष तुम स्वामिजू, सबकर जानहु अन्त ।
व्यासदेव केवट तनय, तौन कहहु बिरतन्त ॥ ५१ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुन समभावों तोही । जेहि विधि जन्म व्यास कर होही
सरजू नदि पश्चिम में आई । आपन रूप धरा तहँ ठाई
ताही समय राज गृह गयऊ । विधिसंयोग भेंट तहँ भयऊ
युवती सुघर देखियत माहीं । मोहित भए मनहिं हरषाहीं
राजा पुनितेहि कर धर लीन्हा । हर्षवन्त ह्वै रति रस कीन्हा
राजा बहु रिअन्तः पुर गयऊ । केतिक दिन वहिबातन भयऊ
कन्यादान दीन जब आई । ताकहँ तबै दीन पहुँचाई

॥ दोहा ॥

सो निरबंशी राजा, कन्या हितकर लीन्हा ।
सो पुनि जाय कन्तपुर, अनन्द बधावा कीन्हा ॥ ५२ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनो मोर सतभाऊ । राखेउ भवनकन्याकरनाऊ
 वर्ष सात की भई कुमारी । बरचिन्तानृपमनहिबिचारी
 दासराज राजा इक आही । कन्या ताहि पुनीत बिबाही
 करि बिबाह राजा लै आवा । मुद समेत नृप बिदा करावा
 आश्विन मास पक्ष उजियारा । पितृकाज करहिं संसारा
 जहाँ पितृकाज नृप होई । तेहि दिनरजौवती भइ सोई
 सुनिराजाजियचिन्तालाई । दरबानी कहँ लीन्हबुलाई
 पण्डितजनसबलावहु जाई । ब्राह्मण कहँ करो सो जाई

॥ दोहा ॥

पण्डित ऋषी बुलाइ के, भाषा सब ब्यवहार ।
 पितृकाज तिय रजवती, तेहिकर कवन बिचार ॥५३॥

॥ चौपाई ॥

ब्राह्मण कहँ पितृकर काजा । वर्ष राज महँ होवे राजा
 आजुहि पितृकाज नृप होई । और लगन धरिसकैनकोई
 पितृकाजसब बिप्र लगाये । राजा तुरत शिकारहिं धाये
 अर्जुनसुनुबिधिकेसंयोगाहरिणाहरिणिकरहिरस भोगा
 देखतमोहितभयउभुवारा । रतिपतित्रसितभयोतेहिबारा

॥ दोहा ॥

दोना एक बनाइ नूप, बीज धरा तेहि माहिं ।
चील्है एक बुलाय के, सौंप दीन्ह तेहि पाहिं ॥५४॥

॥ चौपाई ॥

राजा कहै चील्ह लै जावहु । राख न रानी कहुँ पहुँचावहु
कहेउ बीच राखहु घर सोई । गभ रहै तो बालक होई
इहिविधिचील्हतुरतलेजाई । नदीबीच एक आपति आई
एक चील्ह ऊपर ते आई । दोना आधा फार ले जाई
दुइबुन्दबीजनदीबिचपरऊ । मछली एकताहिलिलिगयऊ
गर्भवती मछली भै वाइ । खेलि शिकार राज घर जाई
पितृकाजतबकीन्हभुवारा । जो कछु राजनकोव्यवहारा
यहि बातन कछु अन्तरपरी । केवट जाल मछली सो धरी
लै मछली राजा कहँ दीन्हा । राजा बहुतप्रेमकरिलीन्हा
कहेउकि मछली उत्तम आही । जवन हेतु बनावहु याही
लैकरमीन बनावनगयऊ । तब इक बालक कन्या भयऊ
हंसिकेबालकभाष्योतबहीं । बोल्योनपजोराखहु अबहीं
नपदासीतबअचरजकीन्हा । मछलीगर्भउतरकसदांन्हा
राजा मछली फेरि मँगावा । अपने आगे बैठि चिरावा

राजा बैठे देखहि ताही । इक बालक इक कन्या आही
 राजा बहुत हर्ष मन कीन्हा । बालकलै रानी कहँ दीन्हा
 केवटकहँ नृप लीन्ह बुलाई । लै कन्या ताही सौँपाई
 अपुत्रीक केवट सो आही । कन्या देखि हर्ष मनमाही
 जो बालकराजा लै राखा । मच्छनारायन नामसो राखा
 राजा भयउ राजा के अन्त । अबसुनुकन्याकरविरतन्ता
 कन्यारत्नजो केवट लीन्हा । नामअगौतीतेहिको दीन्हा

॥ दोहा ॥

तेहि कन्या कहँ अर्जुन, केवट अस मन दीन्ह ।
 जीवन आसा जानिके, सेवा बहु बिधि कीन्ह ॥ ५५ ॥

॥ चौपाई ॥

सेवाकरतबहुतदिनगयऊ । यहि बिधिवर्ष सातकै भयऊ
 केवट घाट करै घटवारा । जो कोउ जाय उतारै पारा
 बैठि नाव पर कन्या अहई । आपन कर्म सिखावत रहई
 सुखसुखलोकैतिकदिनगयऊ । एकदिनकेवटव्याधितभयऊ
 केवटव्याधिव्यथहिमहँधावा । घाटसौँपिकन्याकहआवा
 कन्या बैठी अपने भाऊ । विधिसंयोगअग्निशर आऊ
 मुनिपाराशर आसन जायो । देखे केवट घाट न पायो

फिर देखो कन्या एक आही । तब ऋषि बचन कहाते हि पाही
 कन्यहि कहे उ देउ कछु तोही । नदी पार उतार तैं मोही
 कन्या कहै अन्य ना लेऊँ । बैठहु नदी पार करि देऊँ
 पिता दुखित हैं मोर गोसाँई । दया करो व्याधि क्षय जाई
 बोले ऋषी भयउ तव काजा । पिता तुम्हारनी कभा आज्ञा
 तुम अपने मन सोचन आनहु । बचन हमार सत्य करि मानहु
 पिता तुम्हारनी कहै जाई । आपनि अवशिरो ग क्षय पाई

॥ दोहा ॥

इतना भाषि ऋषीश्वर, बैठि नाव पर जाय ।
 कन्या बैठी डाँड़ लेइ, दीन्हेसि नाव चलाय ॥ ५६ ॥

॥ चौपाई ॥

थोरी दूर नाव जब आई । उत्तम बात ऋषी चित लाई
 उत्तम घड़ी अहै यहि बारा । और नारि नहिं साथ हमारा
 यहि बेरा जो सोरति माना । होवै सुत त्रिलोक जे हि जाना
 चारि वेद मुखपाठ बखानै । अष्टादश पुराण सो जानै
 तबहिं परस्पर कह्यो विचारी । सुनहु बचन केवट को बारी
 जगत मध्य तुम्हार यश रहहीं । मानहु बचन जो साँच हम कहहीं

॥ दोहा ॥

हृदय विचारि पराशर, कहेउ बचन परमान ।
सुन्दरि सुनहु सुलोचनी, देहुमोहिं रतिदान ॥ ५७ ॥

॥ चौपाई ॥

तब कन्या मन बहुत लजानी । ऋषिसन बोली अमृत बानी
देह गंध मम मत्स्य समानी । मैं बाला कछु भेद न जानी

॥ दोहा ॥

कहा देखि मोहि रीभेउ, कीन्हो चहहु प्रसंग ।
तुम्हें योग हम नाहि है, केहि विधि लागहु अंग ॥ ५८ ॥

॥ चौपाई ॥

तब ऋषि बोले बचन रसाला । यह नहि सोच करौ तुम बाला
हम आज्ञा दीन्हा भगवती । होहु तुरत तुम यौवनवती
देह तुम्हार सुगन्ध बसाई । बास सुचार कोसलों जाई
योजन गंध नाम तेहि दीन्हा । होहु तुरत हम आज्ञा कीन्हा
ऋषी बचन को मेटन हारा । भयउ तुरत ना लागेउ बारा
कहेउ कि रति दे केवट बारी । औरौ मैं कछु कहौ विचारी

॥ दोहा ॥

कन्या बोली हर्ष के, तव आज्ञा शिर लेउ ।
दोनों दिशा मनुष्य हैं, कैसे कै रति देउ ॥ ५९ ॥

॥ चौपाई ॥

तब ऋषि अपने मनै विचारा । कुहिरा जन्म भये तेहि बारा
अस कुहिरा भो कहा न जाई । दिनके तुरत रात ह्वै जाई
ऋषि अति हर्षवन्त मन कीन्हा । रतिरसदाननावपर लीन्हा
कीन्है रतिकलुदेरन भयऊ । व्यास जन्म तेहि ठौरहि भयऊ
जन्म भयउ अरु बाढ़ी काया । कहीन जाय विष्णुकी माया
अर्जुन सुनहु कहै भगवाना । चार वेद मुखपाठ बखाना

॥ दोहा ॥

व्यास जन्म तोहि भाषेऊ, सुन अर्जुन चितलाय ।
जन्म जन्म कर पातक, पढ़त सुनत क्षय जाय ॥ ६० ॥

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुन तिनको व्यवहारा । ऋषीउतरिगे पहिले पारा
व्यासदेव तब बैठे जाई । परमज्योतिमहँ ध्यान लगाई
ऋषिसुन्दरिसे सबरसलीन्हा । कन्यारूप फेरि तेहि दीन्हा
पुनि स्नान करि कीन्ह पयाना । तिनको बिदा कीन्हसनमाना
सो कन्या अपने घर आई । पाराशर तब बैठे जाई

॥ दोहा ॥

दासराज नृप कन्या, मीन गर्भ अवतार ।
यहि विधि जन्म व्यास मुनि, सुनहु सो कुन्ति कुमार ॥ ६१ ॥

॥ चौपाई ॥

तब अर्जुन उठि सेवा लाई । व्यास जन्म जानेउ यदुराई
सकलपुराणनव्यासबखाना । याकोअर्थ कहहु भगवाना
आदिपुराण कवनप्रभुभाखी । अष्टादश बेवरा करिराखी

॥ दोहा ॥

आदि पुराण प्रभु भाषहु, मेटहु मोरा शोक ।
अष्टादश पुराण महँ, केतिक हैं श्लोक ॥ ६२ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुन जो पूछेहु मोहीं । भिन्नभिन्नकरिभाषौतोहीं
प्रथम ब्रह्मपुराण जो आसी । दश सहस्र हैं पद्य सतासी
पद्मपुराण अनूपजोकीन्हा । पचपनसहस्रपद्यशुभलीन्हा
तेहि पाछे भो विष्णुपुराना । तामें तेइस सहस्र बखाना
शिवपुराण सबही निर्माई । चौबिस सहस्रपद्यमुखदाई
कीन्हेपुनि भागवत पुराना । सहस्र अठारह पद्यबखाना
मुनि नारद पुराण जोभाषा । सहस्रपचीसपद्यतेहिराखा
मार्कण्डेयपुराण जो आही । नव सहस्र श्लोक हैं ताही
तेहिपाछेभो अग्नि पुराना । पन्द्रह सहस्र सुपद्यबखाना
तेहि पाछे भविष्य उपराजा । चौदह सहस्र पंचशतराजा
फेरि ब्रह्मवैवर्त पुराणा । सहस्र अठारह पद्य पुराणा

ताके पाछे बराह बखाना । चौबिस सहस्र पद्य पुराना
 फेरि स्कन्दपुराण बनावा । सहस्र इकासी पद्य सुहावा
 अरु बावन पुराण जोआही । दस सहस्र श्लोक है ताही
 पुनि उपजाया कूर्मपुराणा । सत्रह सहस्र पद्य परमाणा
 मत्स्यपुराण सुरम्य बनाई । चौदह सहस्र पद्य सुखदाई
 गरुड़पुराणकीन्हऋषिसत्तम । उनइस सहस्रपद्यहैउत्तम
 पुनि ब्रह्माण्डपुराण बनावा । बारह सहस्र सुपद्यसुहावा

॥ दोहा ॥

एक एक कर भाषेउ, पुनि कीन्हो सब थोक ।
 अष्टादश पुराण महँ, चारि लक्ष श्लोक ॥ ६३ ॥

॥ चौपाई ॥

व्यासपुराण अठारह कीन्हा । सो अर्जुन तुमसों कहि दीन्हा
 चारि लक्ष श्लोक तिनमाहीं । इनमें घाटि बाटि कछु नाहीं
 जोकोइ घाटि करे मनमाहीं । लिखनहार शिरदोष कराहीं
 सुन अर्जुन तोपर ममदाया । हम तुम एक दूसरी माया
 तेहि कारण कछु भेदन राखा । उत्पति परलय सबमै भाखा
 कह अर्जुन सुन नन्दकुमारा । दासनको संकट किमिटारा
 सुन अर्जुन जेहि सङ्कट परहीं । निश्चय मोरनाम चित धरहीं
 ताकर संकट काटौ जाई । दुष्ट मारि तेहि देउँ छुड़ाई

जेहिजेहिकर मैं संकटटारा। सोतोहिंभाषाकुन्तिकुमारा
 एकसमयविधिअवसरराजा। पानीपियनगयोगजराजा
 तृषावन्त जल भीतर जाई। ताहिग्राह एक पकस्योआई
 कालसमानधरा असताही। गजकरजोरचलाकछुनाही
 खैंचिग्राहलेचलानिदाना। गजकोकालआइनगिचाना
 अतिहिकष्टगजभयोदुखारी। महाबिकलहैकहेसिपुकारी
 कृपासिंधुमोहिं लेहुउबारी। परेउअथाहअगमजलभारी
 हम सतिभामा खेलै पासा। पुरी द्वारिका मध्यनिवासा
 यहि अन्तरगजराजपुकारी। सतभामा कह पासाडारी
 सत्रहसहस्रयोजनगजराजा। ताकोकाननसुनेउँअवाजा
 पासाडारि चल्योअकुलाई। सतभामा तब कहा रिसाई
 केहि राखेउ कोहै यहि ठाई। खेलत माया करो गुसाई
 पासा मोर परी तुम देखा। मैं अपने खेलब करिलेखा

॥ बोहा ॥

तबहि कृष्ण हँसि बोले, तुम जनि जानहु मन्द।
 ग्राह गहा गजराज कहै, ताकर काटौ फन्द ॥ ३४ ॥

॥ चौपाई ॥

तबसतिभामाअचरजमाना। यहसमभायकहोभगवाना
 मैं जानत हौं तुमहिं गोपाला। दयाधर्मतुमहीं नँदलाला

सत्रहसहस्रयोजनगजराजा । ताकर कैसे सुनेउ अवाजा
जोतुमसत्यकहहुयहबानी । मोहिंदिखावहुसारंगपानी
तबहीं गरुड़हँकारेउबीरा । तेहिचढ़िगयउताहि के तीरा
ग्राह परा देखा जलमाहीं । चक्र घाव सो मारा ताहां
हस्ती ठाढ़ रहेउजलतीरा । थरथर काँपत सकल शरीरा
जबसतिभामा देखाजाई । तब बहुविधिकै अस्तुति लाई
द्रुपदसुता की लज्जाराखी । सो अर्जन देखो तुम आँखी
संकट से प्रहलाद उबारा । सो तुम जानहु कुन्तिकुमारा
हिरणकश्यप को उदर बिदारो । अत्रनमालगले महँ डारो
मार्कण्डेय सुनो हम पाहीं । ब्राह्मण के नन्दनतो आहां
तीनलोकजबपरलयभयऊ । बूढ़नलगेयादमोहिकियऊ
कहेउ कि बूड़ेसारंगपानी । गर्भान्तरराखेउ तेहिआनी
धन्य गरुड़बिनतासुत भाषा । अस्सीयुग पीढ़ी पर राखा
तेहिऊपरतनुसक न सम्हारी । अक्षयबटतरदीन्हउतारी

॥ दोहा ॥

ब्याकुल भयो विनतासुत, जानेउ मन में बीर ।
तेहि पुनि कीन्हेउ गर्वबहु, बैठि रह्यो मतिधीर ॥६५॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहे सुनो यदुराई । मेरे चित शङ्का कछु आई

तुमरे कैसे उदर समाना । संशय बड़ उपजा भगवाना
 सुन अर्जुन तोहिं कहौं बुभाई । सबै मोहिं मों सबै समाई
 सप्त उदधि पृथ्वी नवखंडा । मेरु सुमेरु सकल ब्रह्मंडा
 जहँ लगि सृष्टि कहौं तोहिं पाहीं । तीन लोक मम उदर के माहीं
 विनता सुत जो बहिनी भाई । शत योजन ताकर चकलाई
 पक्षी एक गरुड ते भाखा । पूछेउ स्वामी तुम सब राखा
 तीन लोक में जो कछु आहीं । सो देखहु मेरे घट माहीं
 भक्ति भाव जानेउँ मैं तोरा । तुम मौसी सुत भाई मारा
 तुममें भेद कहौं समुभाई । और के बूते जानिय जाई
 अर्जुन कहै सत्य यदुराई । मैं तुम्हार मौसी सुत भाई
 जातहि भेद अज्ञानहि मेटी । कुन्ती उग्रसेन की बेटी

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहै गोसाँई जी, सो तुम करो उपाय ।
 तुम्हरे चरण कमल तजि, चित्त अनत ना जाय ॥ ६६ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सत्य बचन सुन मोहीं । मैं अपने हित जानौं तोहीं
 बहुत भाँतिका कहौं बुभाई । नाम जो मार भजहि चित लाई
 भज चित लाइ नाम मम जोई । तेहि समान अर्जुन ना कोई

सङ्कटकोटि जोसहहिं शरीरा । नाम मोर छाड़े नहिंवीरा
 धनऔ द्रव्य न मनमें जानै । दुखसुखको शंका नहिं आन
 एक जन्म दुख पावै सोई । कोटि जन्मता कहँ सुखहोई
 चितदे नाम जपै जो बीरा । ताके पाप न रहै शरीरा
 नाम ब्रह्म चित से धरि जाना । सो प्राणी है देव समाना
 अर्जुनसत्यसुनोहमपाहीं । रामभजनबिनअरुकछुनाहीं
 कोटिनतीरथब्रत जो जाना । नहिं अर्जुनहैनाम समाना

॥ दोहा ॥

उदय अस्त सब जाके, चार वेद मुख जान ।

कोटि कोटि गुण जाने, नाहि न नाम समान ॥६७॥

॥ चौपाई ॥

सुनहुअर्जुनपाण्डुकुमारा । नामकीमहिमालिखैविधारा
 कल्पवृक्ष के कलम बनाई । घासपात तब लीन्ह जलाई
 राखसमेटिसिंधुमहँडारी । प्रथमकीन्हबहुविधिविस्तारी
 सातसमुद्र कीन्हमसिमानी । धरतीकागद कीन्हसुहानी
 लिखिलिखिसगरोभूमिसिराई । नामकीमहिमालिखीनपाई

॥ दोहा ॥

इतनी कीने सरस्वती, सुन अर्जुन चितलाय ।

महिमा मोरि न जानै, कोटिन करै उपाय ॥ ६८ ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुन अर्जुन कहौं बुझाई । महिमा मोरि भक्तकछुपाई
 सो भवसागर जाने कैसा । कुसुमरंग अमरावति जैसा
 जो कछुतीनलोक में आही । एकौ दृष्टि न आवै ताही
 सप्त पताल अपर ब्रह्मण्डा । सप्त द्वीप पृथ्वी नवखण्डा
 तीनलोक अर्जुन यह वाही । जो दर्पण अस देखेताही
 चंद्रसूर्य दीपक अस जानै । कामदेव मर्कट सम मानै
 धनदसमान धनीको उआही । दुखिया सम जानै तेवाही
 उनचास कोटिमरुत है कैसा । नासापवन बहुत है जैसा
 अर्जुन सुनो कल्पतरु जोई । जाने एक वृक्ष है सोई
 सात समुद्र नीर अतिभारा । सो जानत है चुल्लू धारा
 इन्द्र समान राज नहिं कोई । रंक समान बुझावै सोई
 गिरिसुमेरुको मनसों कहहीं । ढेला एक धराजन अहहीं
 हिमगिरिकहँ मानहिंवेकैसे । अतिहीलघु एक कीट है जैसे
 वरुणहि ते जानत हैं कैसा । जल में एक कीट है जैसा
 बृहस्पति को मूर्ख कै मानै । पुष्प सदृश तारागण जानै
 इतनी दृष्टि न आवत ताही । नखरैकेहि गिनतीमाही

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाँइ जू, वह कीजै परकास ।
जन्म जन्म मन चितरहे, हरि के चरणकिआस ॥६६॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसत्यवचन सुन मोहीं । गीता ज्ञान कहौं मैं तोहीं
आवागमनतोरनशिजाइ । कोटि जन्मकर पापनशाइ
छौशास्त्रमथिकैजब लीन्हा । रामरतन गीतातब कीन्हा
श्रीमुखमैभाष्योतोहिजोई । तेहिसमानजगमेंनहिंकोई
ताके गुण सुनि कुन्तिकुमारा । जब यह ग्रन्थ चले संसारा
कथा ठौर बैठे जो कोई । ताहि मोक्ष की प्राप्ती होई
राखै सुर पुराण यह गीता । क्षत्रिय पढ़ै सोरणमहँजीता
संत असंत पढ़ै जो कोई । ज्ञानवन्त उत्तम गति होई
चित देके जो पढ़ै सुनावै । यमदूतन्ह नहिंताहि डेरवै
निश्चयमन जे पढ़तैरहई । जहाँ जात चिन्तानहिंकरई
गीता पढ़े सुने जो कोई । बुद्धि होय तो छूटै सोई
आधिब्याधिहै जाके अंगा । गीतापढ़त तजतसोसंगा
दुष्ट चोर ठग तहाँ न रहई । राजा प्रजा की रक्षा करई
जेतिकगुणगीतामेंआही । आदिअंतकहिसकोँनताही

तीनदिवस जोपढ़ै सुनावै । कोटिकोटिगुणकहतन आवै
 देवन करै पाठ यह गीता । मानव पढ़ै सुनै यह चीता
 दुख दरिद्र सब जात पराई । गीता पढ़ै सुनै मन लाई
 रामरत्न गीता प्रभुभाखा । परम तत्त्व अर्जुन करिराखा
 श्रीमुख गीता पूरण भयऊ । अर्जुनकरसंशयमिटि गयऊ
 अर्जुन कृष्णगूढ़यह कीन्हा । रामरत्न भाषाकरि दीन्हा

॥ दोहा ॥

श्रीगोविन्द औ पार्थ मिलि, परम गूढ़ यह कीन्हा ।
 तिनके चरणकमल चित, कुशलसिंह चित दीन्हा ॥

